कुम्भ

अनिता भटनागर जैन

चित्र : पार्थ सेनगुप्ता

nbt.india
एकः सूते सकलम्

8 से 10 वर्ष के बच्चों के लिए

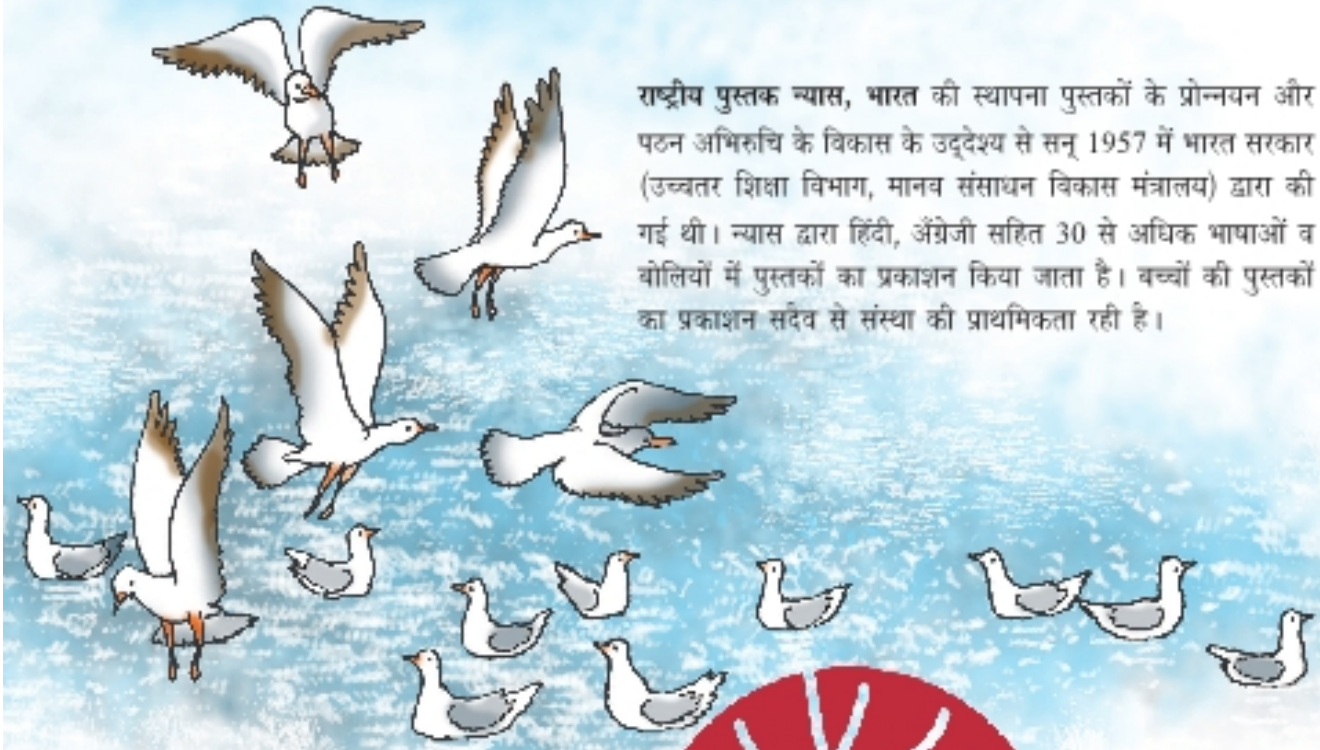

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

nbt.india

एकः सूते सकलम्

ISBN 978-81-237-9133-3

पहला ईप्रिंट संस्करण : 2020

© अनिता भटनागर जैन

Kumbh *(Hindi Original)*

₹ 40.00

ईप्रिंट द्वारा ऑनंट टेक्नो सर्विसेज प्रा.लि

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

कुंभ

अनिता भटनागर जैन

चित्र : पार्थ सेनगुप्ता

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

"जय गंगा मैया"

"अरे मर गया! कितना ठंडा पानी है?"

सूरज अपने नानाजी के साथ कंधों तक ऊँचे पानी में खड़े होकर अंजुली में जल भर उगते हुए सूर्य को प्रणाम कर रहा था। उसकी नानी, संगम के इस स्थल पर जहाँ गंगा, यमुना व अदृश्य सरस्वती नदियाँ मिलती हैं, नाव पर बैठी थीं। नानी की उंगलियाँ माला पर जाप कर रही थीं और चेहरे पर भीनी-सी संतोष भरी मुस्कराहट थी। प्रयागराज में कुम्भ के दौरान आने की उनकी वर्षों की इच्छा जो पूरी हो गई थी।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

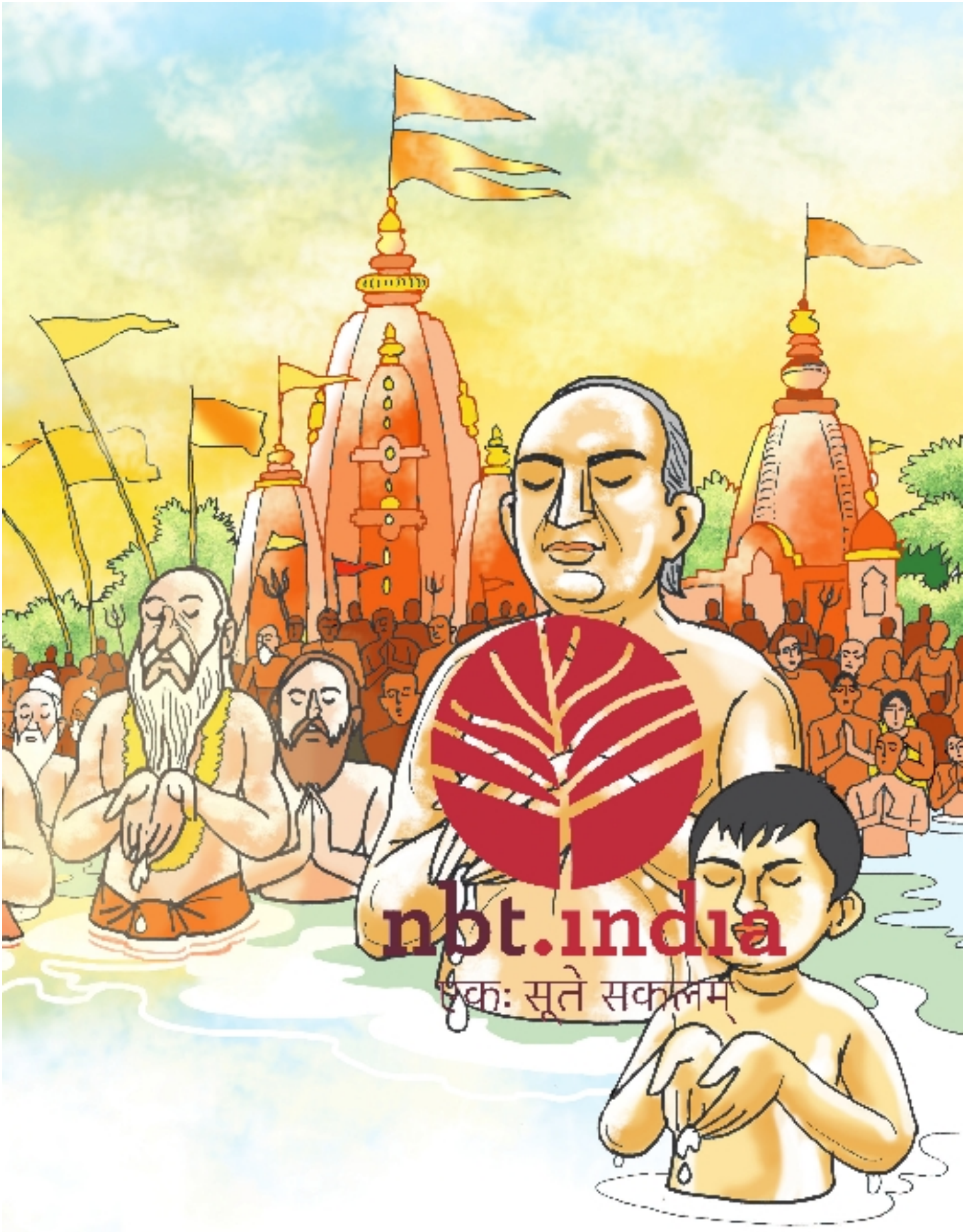

nbt.india
एकः सूते सकलम्

चाँदनी ने नाना की बाँह खींचते हुए पूछा, ''नाना! कुम्भ मेला कितने सालों से मनाया जाता है?''

''यह माना जाता है कि यह मेला 2000 वर्ष पुराना है। ऋग्वेद में भी इसका वर्णन है,'' नाना बोले।

''मैंने इंटरनेट पर पढ़ा था। सम्राट हर्षवर्धन के राज्य में चीनी यात्री ह्वेनसाँग (Xuanzong) ने भी अपने वृत्तांत में इसके बारे में लिखा है,'' सूरज ने गर्व से कहा।

नदी पर असं[illegible]ीं। उन पर लगे केसरिया झंडे हवा में ल[illegible]ु नाव पर बैठकर ही पूजा कर रहे [illegible]क्षियों के समूह, धैर्य से भोजन मि[illegible]क्षियों के अन्य समूह आसमान में च[illegible] वे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा [illegible]से बड़े धार्मिक सम्मेलन में भाग लेने आए हों। [illegible] बाँसुरी की मधुर धुन और सूर्य

nbt.india
एकः सूते सकलम्

की स्वर्णिम किरणों में चमकता हुआ दृश्य इतना सुंदर था कि वह काल्पनिक लग रहा था।

तट पर वापस पहुँचने पर बच्चे नाश्ता करने को उत्सुक थे। उनके भागते हुए कदम नानी की आवाज़ से रुक गए। "बच्चों यहाँ बड़ों का हाथ पकड़ कर चलो, यहाँ भीड़ में खोना बहुत आसान है।"

अनेक रंग-बिरंगे स्टाल में खाने के नाना प्रकार के व्यंजन मिल रहे थे। नाना सबको "बनारसी कचौड़ी
लकड़ी की बेंचों पर बैठे। पत्तल में गरम
व जलेबी और कुल्हड़ों में मलाईदार दू

दुकान के मालिक वृद्ध थे, पर
सीधी थी। सिर पर लाल पारम्परिक पग
में वे राजसी लग रहे थे। हँसते हुए उन्होंने
तुम अपने सब पाप धो आए?"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

"जी हाँ।" सूरज ने उत्तर दिया। "कुम्भ में पवित्र नदी में डुबकी लगाने से सभी पाप धुल जाते हैं। मैंने प्रण किया है कि प्रयास करूँगा कि भविष्य में कोई गलत कार्य न करूँ।" अपनी जीभ से मलाई से बनी मूँछ को चाटते हुए चाँदनी के पूछा, "नानी, मेरी टीचर की माताजी मध्य प्रदेश में रहती हैं और उन्होंने वहाँ कुम्भ में भाग लिया था। क्या कुम्भ वहाँ भी मनाया जाता है?"

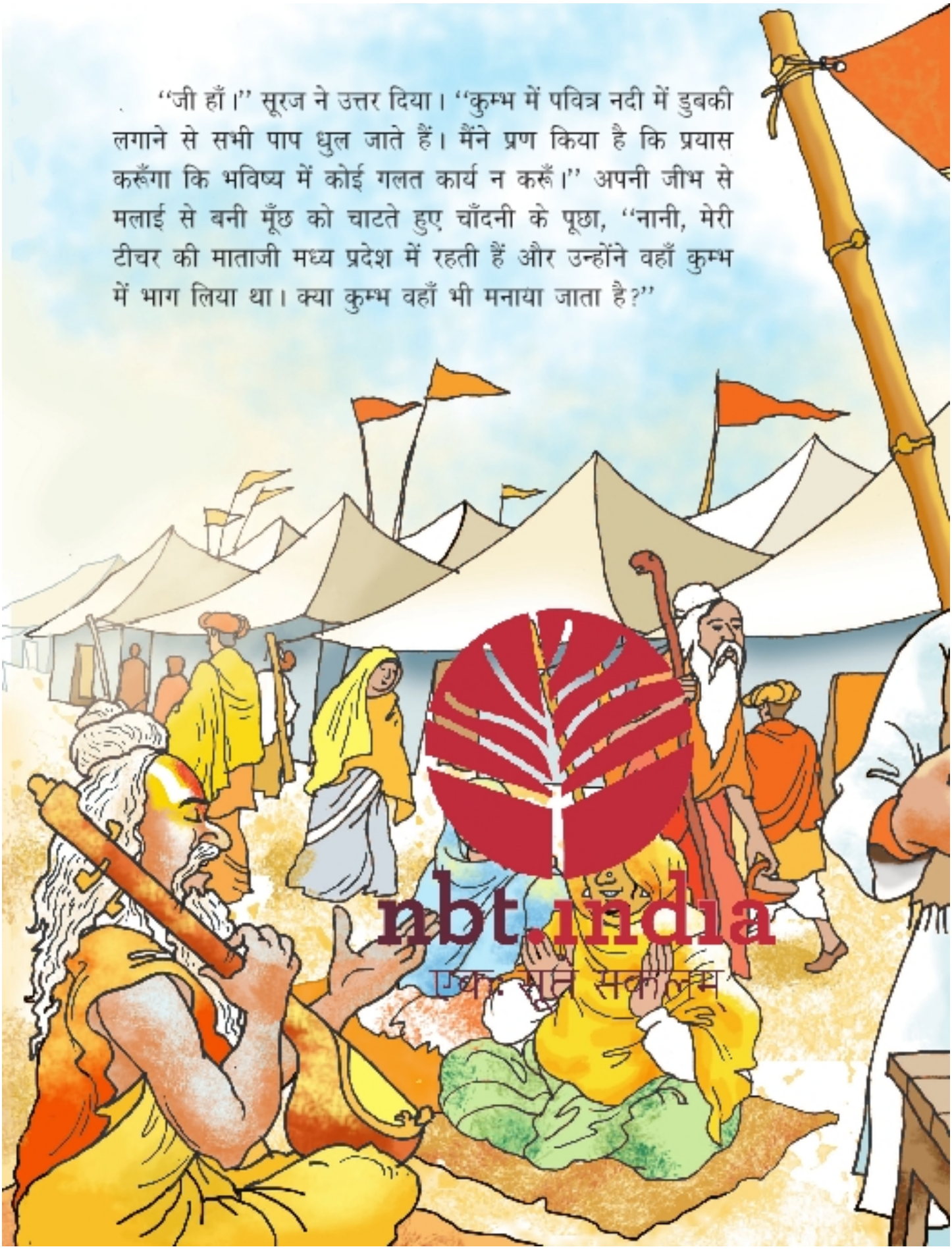

nbt.india

nbt.india

"हाँ, कुम्भ मेला हर तीन साल बाद बारी-बारी से चार स्थानों पर मनाया जाता है..उत्तर प्रदेश में प्रयागराज, उत्तराखंड में हरिद्वार, मध्य प्रदेश में उज्जैन व महाराष्ट्र में नासिक में। प्रत्येक 12 वर्षों में पूर्ण कुम्भ होता है," नानी ने बताया।

नाना जो बच्चों का ज्ञान बढ़ाने का कोई अवसर नहीं खोते थे, ने इन चारों स्थानों की नदियों के नाम बताए–"प्रयागराज में गंगा, यमुना व सरस्वती का संगम, हरिद्वार में गंगा, उज्जैन में पाताल नदी, शिप्रा और नासिक में गोदावरी।"

"पर इन्हीं चार स्थानों पर ही क्यों?" कुरकुरी जलेबी का अगला कौर लेते हुए चाँदनी बोली।

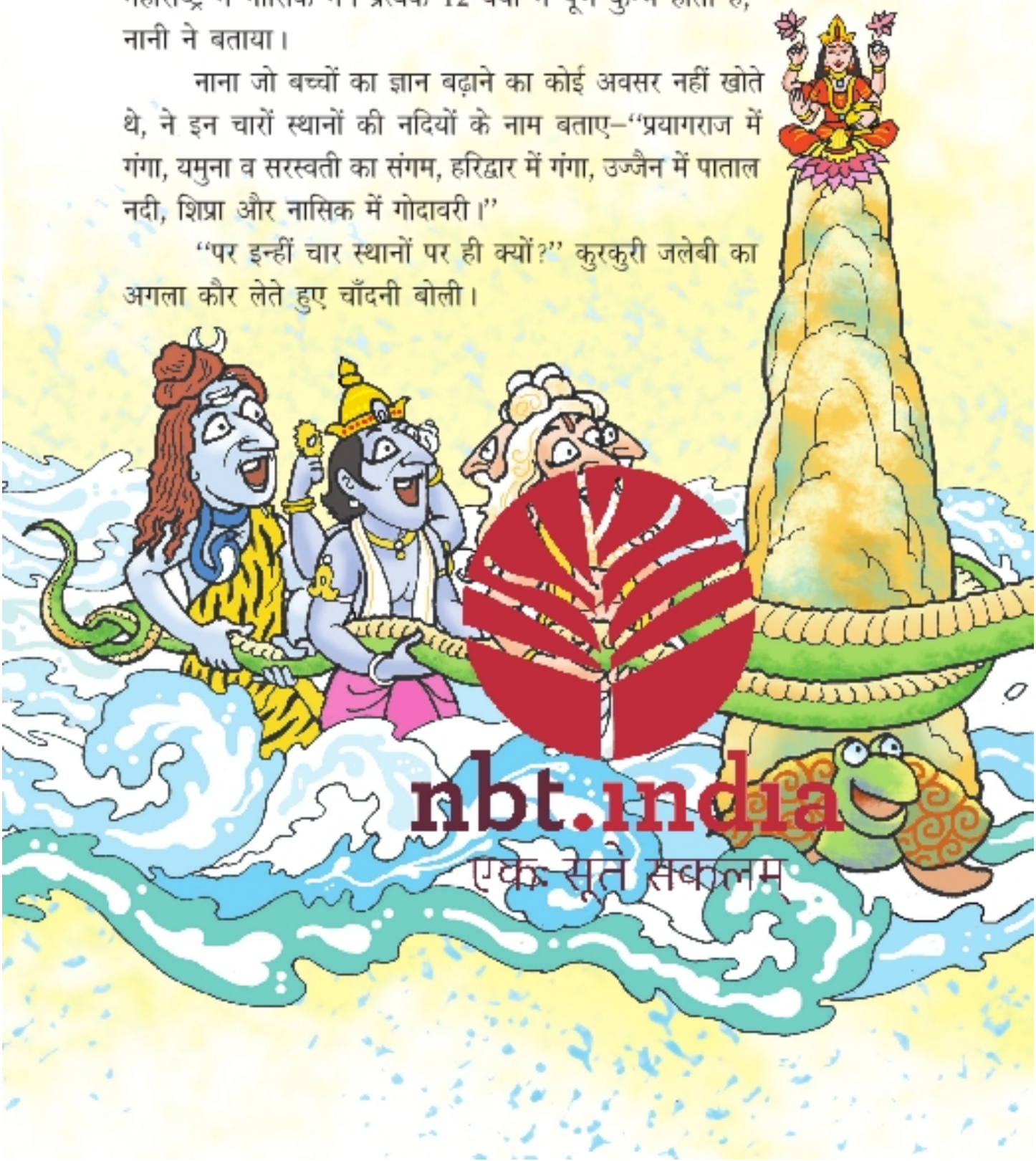

nbt.india
एक सूत्रे सकलम

नाना से पहले दुकानदार ने नाटकीय अंदाज़ में उत्तर दिया, "सबसे लोकप्रिय पौराणिक कहानी है कि देवता और राक्षसों के बीच युद्ध में देवता हार गए। तब वर्षा के देवता इंद्र, ब्रह्माजी के पास गए जो उन्हें लेकर मदद के लिए भगवान विष्णु के पास पहुँचे। विष्णुजी ने 'समुद्र मंथन' का सुझाव दिया। मंद्राचल पर्वत को मथनी बनाया गया और वासुकी, सर्प देवता को रस्सी। मंथन से अमृत का

nbt.india
एकः सूते सकलम्

कुम्भ या कलश भी बाहर आया। अमृत जिससे व्यक्ति अमर हो जाता है, उस कलश को पाने के लिए हुई लड़ाई में अमृत की कुछ बूँदें चार स्थानों पर गिरीं। बच्चों इन्हीं चार स्थानों पर कुम्भ मनाया जाता है।''

अब बच्चे अपने टेंट वापस पहुँचने के लिए उत्सुक थे। जहाँ तक नज़र जाती टेंटों की पंक्तियाँ दिख रही थीं। इन टेंटों में 20,000 से अधि[illegible] लगाए गए थे। तम्बुओं के हवाई दृश्य के [illegible] बोला, ''यह तो प्राचीन समय का चि[illegible] शहर।''

एक [illegible] प्रवचन चल रहा था। हज़ारों लोग द[illegible] रहे थे। माइक्रोफोन पर आवाज़ गूँ[illegible] आयोजन का स्थल सूर्य, चंद्रमा और बृहस्प[illegible] भिन्न राशियों के स्थानों से तय होता है। [illegible] नक्षत्रों से एक अद्‌भुत लौकिक घटना होती

nbt.india
एकः सूते सकलम्

है, जिसमें कुम्भ में नदी में स्नान करने से व्यक्ति जन्म और मृत्यु के चक्र से छुटकारा पा जाता है और मोक्ष प्राप्त कर लेता है।'' विशाल भीड़ ने उत्साह में तालियाँ बजाईं।

नींद लेने के बाद बच्चे फिर उत्साहपूर्वक अपनी मेघा मौसी, जो कि मेला अधिकारी के दफ्तर में काम करती थीं, के साथ जाने के लिए तैयार थे। मौसी, मेला शहर जो कि विश्व का सबसे बड़ा बनाया हुआ अस्थायी [illegible] की विभिन्न व्यवस्था की इंचार्ज थीं।

मेघा ने कहा, ''आओ बच्चों। [illegible] क्या-क्या हो रहा है।'' बच्चे प्रसन्न [illegible] पर उन्होंने स्वेटर पहन लिए थे क्योंकि [illegible] बहुत ठंडी थी। मेघा के साथ आए गाड [illegible] कंधों पर बैठा लिया, ''अब आप सबसे ल[illegible] तक देख सकती हैं।'' चाँदनी खुश होकर हँसने लगी।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

नागा बाबाओं के जुलूस को रास्ता देने के लिए सब लोग मार्ग के किनारे खड़े हो गए थे। कम और ज्यादा उम्र के सभी बाबा निर्वस्त्र थे। माथों पर लम्बे तिलक, गले और कमर में गेंदे की मालाएँ, शरीर पर भस्म मली हुई, वे सब एक-दूसरे को छेड़ रहे थे। सभी बालकों की तरह प्रसन्नचित्त लग रहे थे कि वर्षों से प्रतीक्षित कुम्भ स्नान करने जा रहे थे।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

सूरज से रहा न गया बोला, "मौसी! क्या इन्हें सर्दी नहीं लगती?"

"हाँ, लगती है परंतु यह दृढ़ इच्छाशक्ति से उसे स्वीकार कर लेते हैं। मनुष्य का मन इतना शक्तिशाली होता है कि वह असंभव को भी संभव बना देता है, यदि वह वास्तव में चाहे तो।"

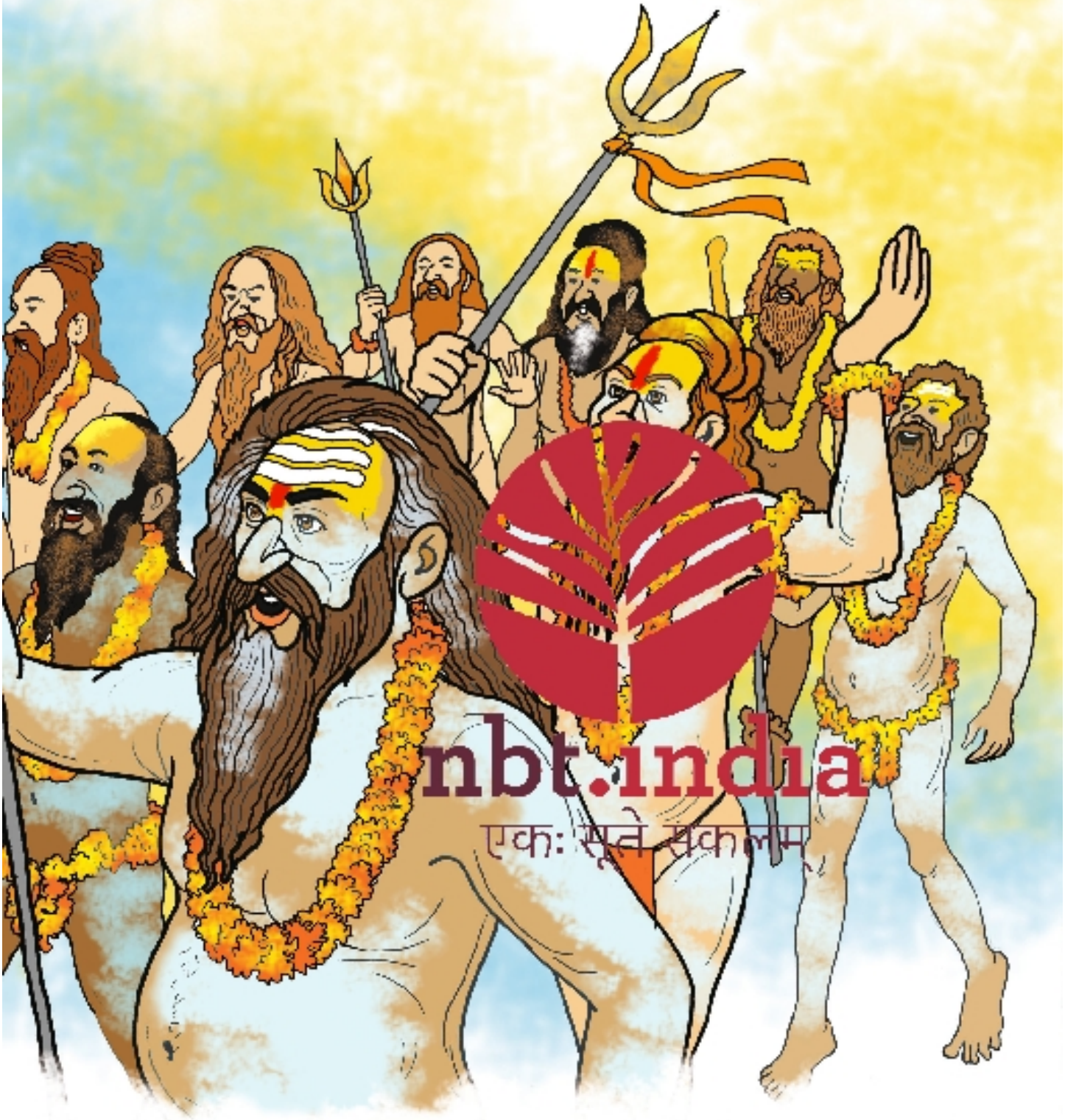

nbt.india
एकः सूते सकलम्

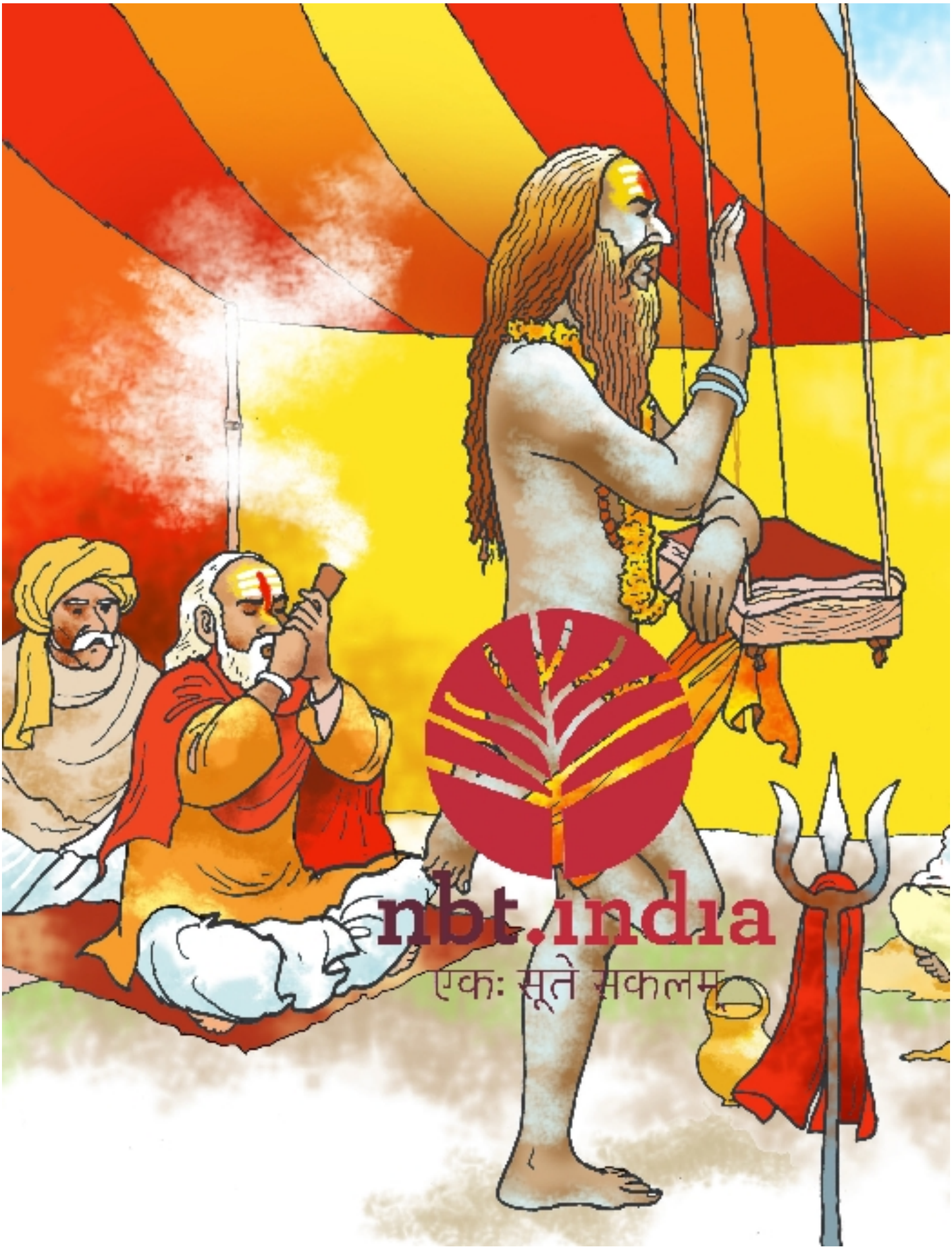
nbt.india
एकः सूते सकलम्

थोड़ा आगे हठ योगियों का अखाड़ा था, ये अपने शरीर से कठोर तपस्या करते हैं। चाँदनी ने अचम्भित होकर देखा, रस्सियों जैसी लम्बी जटाओं के साधु केवल एक पैर पर खड़े थे। उन्होंने दूसरे पैर को मोड़ कर कपड़े की बेल्ट से शरीर से बाँध रखा था। एक अन्य साधु ने एक बाँह उठा रखी थी। उपयोग न करने के कारण वह बाँह बेहद पतली हो गई थी।

nbt.india
एक भारत सर्वोत्तम

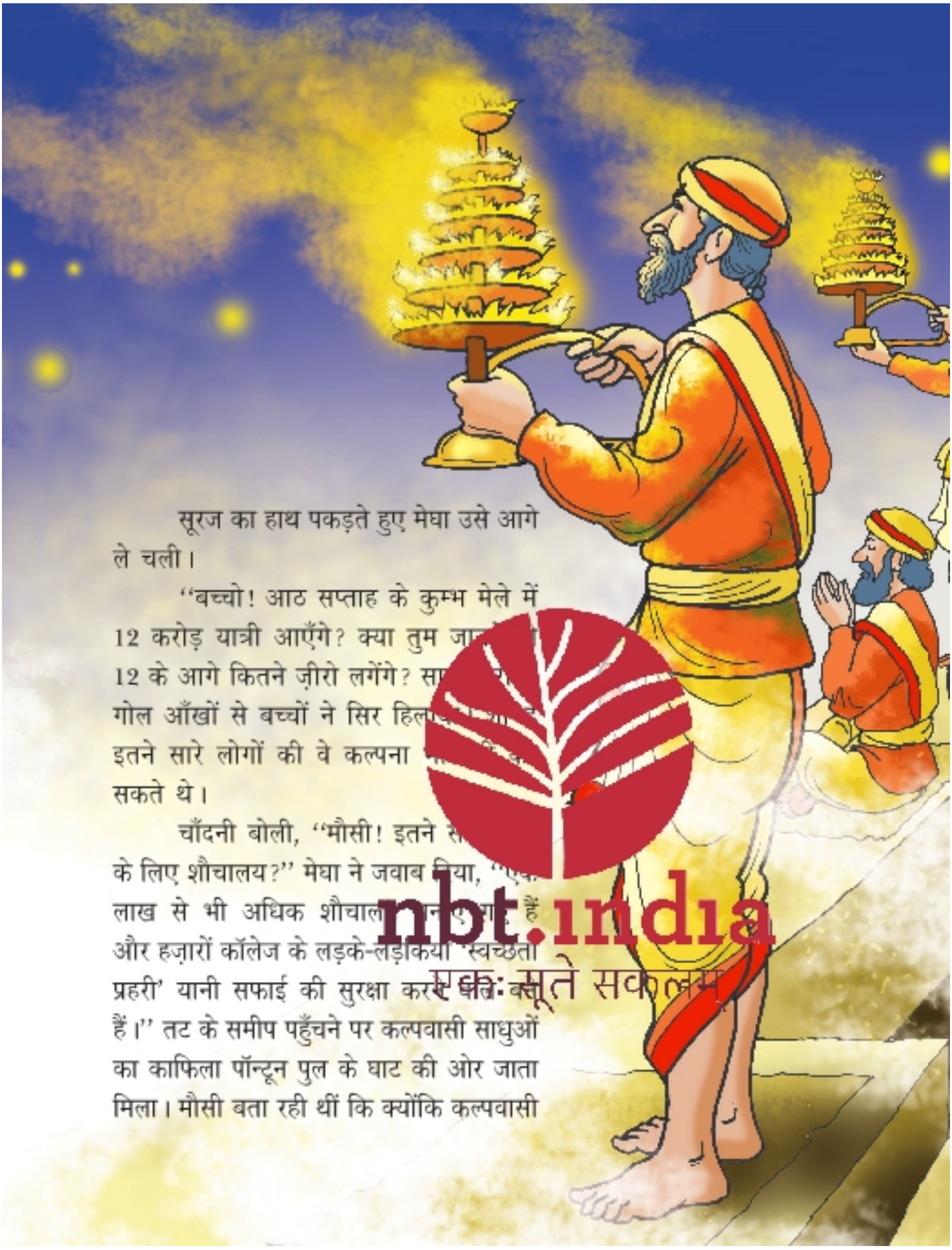

सूरज का हाथ पकड़ते हुए मेघा उसे आगे ले चली।

''बच्चो! आठ सप्ताह के कुम्भ मेले में 12 करोड़ यात्री आएँगे? क्या तुम जा[illegible] 12 के आगे कितने ज़ीरो लगेंगे? सा[illegible] गोल आँखों से बच्चों ने सिर हिल[illegible] इतने सारे लोगों की वे कल्पना [illegible] सकते थे।

चाँदनी बोली, ''मौसी! इतने [illegible] के लिए शौचालय?'' मेघा ने जवाब [illegible]या, ''[illegible] लाख से भी अधिक शौचाल[illegible] हैं और हज़ारों कॉलेज के लड़के-लड़कियाँ 'स्वच्छता प्रहरी' यानी सफाई की सुरक्षा कर[illegible] हैं।'' तट के समीप पहुँचने पर कल्पवासी साधुओं का काफिला पॉन्टून पुल के घाट की ओर जाता मिला। मौसी बता रही थीं कि क्योंकि कल्पवासी

nbt.india

nbt.india
एकं सूतं सकलम्

रोज़ तीन बार नहाते हैं, इसलिए उनके रहने की जगह नदी के पास रखी गई है।

हवा में हिलते पॉन्टून पुल या पीपे के पुल जो केवल मेले के लिए बनाया गया था, पर चलने में बच्चों को मज़ा आ रहा था।

सूरज ढल गया था और अँधेरा बढ़ रहा था। अचानक मेला शहर की बत्तियाँ जल गईं। "अरे मौसी यह तो परियों के देश जैसा जगमगा[illegible]ए चाँदनी बोली। सामने के घाट पर पं[illegible]आरती शुरू की। सात स्तर के दीप [illegible]ही थीं। सबने भक्ति से सिर झुका [illegible]या।

बच्चे ब[illegible] कोर्ट के पास स्थित होने के कारण [illegible] भी कहा जाता है, में दर्शन कर यमुना नदी के किनारे पर पहुँचे, जहाँ प्रयागराज

nbt.india
एकः सूते सकलम्

का किला था। गार्ड ने बताया, ''यह किला 1583 में बादशाह अकबर ने बनवाया था। इसके अंदर जोधा महल में सरस्वती कूप यानी कुआँ है, जो सरस्वती नदी का उद्‌गम यानी प्रारम्भ होने का स्थान माना जाता है।''

तट पर बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई। अचानक बत्तियाँ बंद हो गईं और पूर्ण अंधकार हो गया, फिर किले की दीवार पर शुरू हुआ मंत्रमुग्ध करने वाला लेज़र और साउंड शो।

अगले दिन मकर संक्रांति थी, यानी [illegible] दिन फिर से बड़े होने शुरू होते हैं। [illegible] वह इस पवित्र दिन जब खिचड़ी का [illegible] वे नदी में स्नान करें। बगल के टेंट म[illegible] आयंगरजी नाना को कुम्भ मेले के प्र[illegible] शाही [illegible] और 'मौनी अमावस्या' पर होने वाली स[illegible] बारे में बता रहे थे।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india

अगली सुबह सब घाट पहुँचे। नदी में तैरती रंग-बिरंगी प्लास्टिक की रस्सियों के पीछे ही नहाना था, क्योंकि उनके आगे पानी गहरा था। सबने नदी में खड़े होकर सूर्य भगवान, जिनसे ही जीवन संभव है, को जल अर्पित किया और पूजा की।

घाट पर थोड़ा आगे बड़े से मंडप में बहुत सारे साधु बैठे थे। कुछ मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे, कुछ धूनी या आग के चारों तरफ बैठे थे, कुछ डमरू, घंटा या घड़ियाल बजा रहे थे।

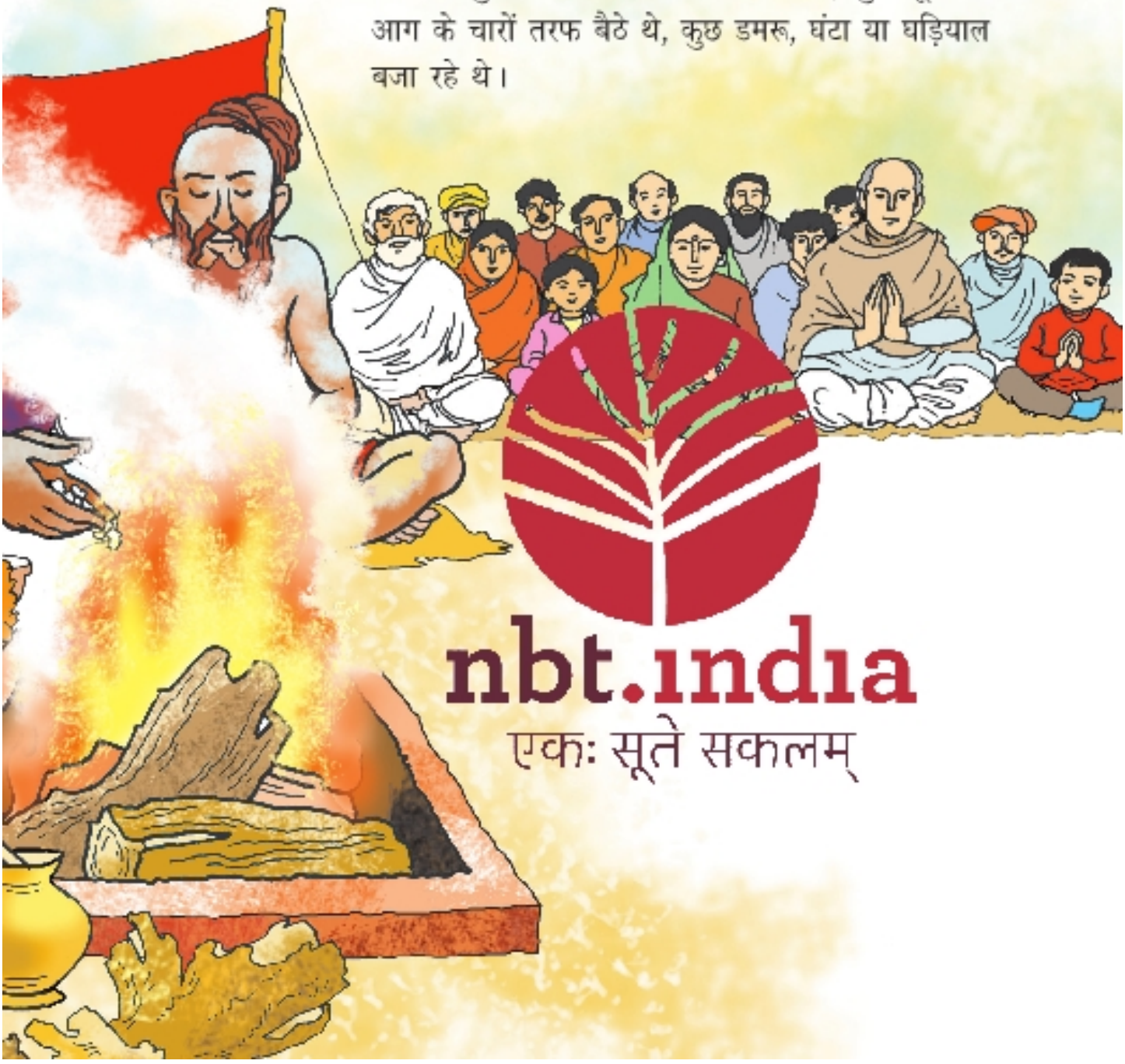

nbt.india
एकः सूते सकलम्

एक हिस्से में ज़मीन पर पँक्तियों में बैठ लोग एक साथ भोजन कर रहे थे, बिना जाति या अमीर-गरीब के भेदभाव के।

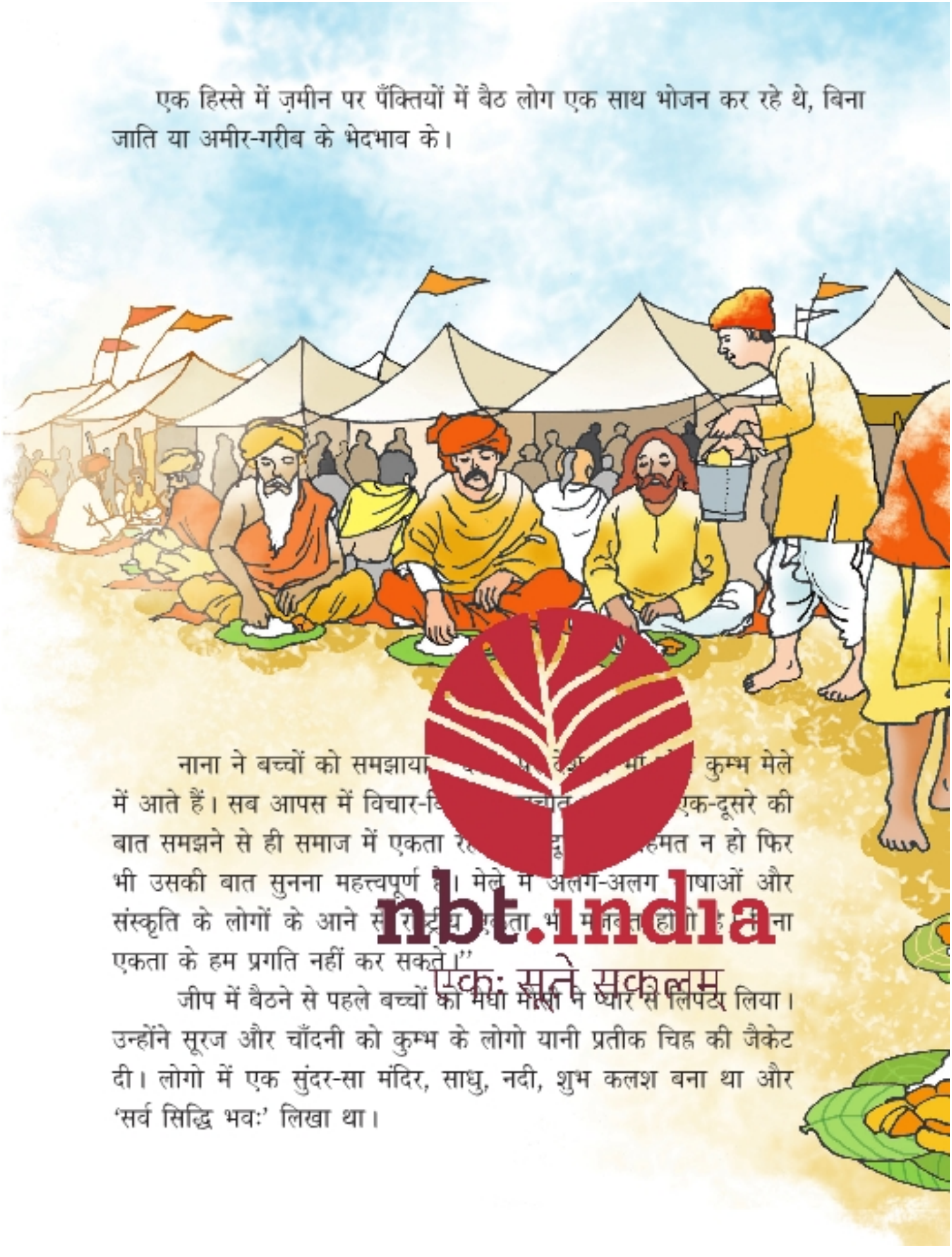

नाना ने बच्चों को समझाया [illegible] कुम्भ मेले में आते हैं। सब आपस में विचार-वि[illegible] एक-दूसरे की बात समझने से ही समाज में एकता र[illegible]मत न हो फिर भी उसकी बात सुनना महत्त्वपूर्ण [illegible]। मेले में अलग-अलग [illegible]षाओं और संस्कृति के लोगों के आने [illegible] एकता [illegible] ना एकता के हम प्रगति नहीं कर सकते।"

जीप में बैठने से पहले बच्चों को मधी म[illegible] ने प्यार से लिपटा लिया। उन्होंने सूरज और चाँदनी को कुम्भ के लोगो यानी प्रतीक चिह्न की जैकेट दी। लोगो में एक सुंदर-सा मंदिर, साधु, नदी, शुभ कलश बना था और 'सर्व सिद्धि भवः' लिखा था।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

मौसी ने बताया, यह माना जाता [illegible] कार कुम्भ यानी कलश जैसा है। इसके अंदर 84 लाख प्रजातियाँ हैं, जिसमें देव, देवी, [illegible], मनुष्य, पशु-पक्षी, वृक्ष आदि हैं। यह भी माना जाता है कि विष्णु, महेश व ब्रह्मा की मूर्ति क्रमशः कलश के मुख, गले या तंग भाग और तली में और देवियाँ मध्य भाग में हैं।''

जीप मेला शहर को पीछे छोड़ सीधे स्टेशन की तरफ जा रही थी। नानी मुस्कराई और बोली, ''कुम्भ का संदेश 'सर्व सिद्धि भवः है यानी सब कुछ संभव है। बच्चो, बड़े सपने देखने, ऊँचे लक्ष्य बनाने, धैर्य के साथ परिश्रम करने से तुम असंभव को भी हासिल कर लोगे।''

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india

एकः सूते सकलम्